# प्रार्थना

प्रकाशक—

भूमानन्द ब्रह्मचारी श्रीभगवद्भक्ति आश्रम
रामपुरा रेवाड़ी।

—:o:—

यह प्रार्थना की पुस्तक ला० मातूराम जी बजाज
जोन्द ने धर्मार्थ वितरणार्थ छपवाई।

rnment to measures

interim relief, Rs 10,000 each

two head constables

the day temperatures (a) Installation of smart glass

श्री गुरुं परमानन्दं वन्दे स्वानन्द विग्रहम् ।
यस्य सानिध्य मात्रेण चिदानन्दायते तनुः ॥

श्री परम पूज्य श्री १०८ श्री स्वामी
परमानन्द जी महाराज ।

श्रीसद्गुरवे नमः

# * प्रार्थना *

## ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ओं

हे तेज पुञ्ज, ज्योति स्वरूप परमात्मन्! ज्ञान और आनन्द के देने वाले! विजय कराने वाले, प्रार्थना और स्तुति करने योग्य, सब को उत्पन्न करने वाले! सबका संहार करने वाले! सब की रक्षा करने वाले! सब को प्रेरणा करने वाले! अनन्त, अपार आनन्द स्वरूप, ज्ञान स्वरूप परमात्मन्! हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम्हारे गुण हम में प्रकट हों और हम तुमको प्राप्त हों। जो तुम हो सो ही हम हैं और जो हम हैं सो ही तुम हो। ऐसे ऐक्य भाव से हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम हमारी बुद्धियों को पवित्र और धर्मार्थ, काम और मोक्ष में प्रेरणा करो। हम में तेरी सच्ची भक्ति और प्रेम प्रकट होवे, सब को

हम अपना ही आत्मा समझें और हमारे शत्रु नाश को प्राप्त हों। भीतर काम, क्रोध इत्यादि और बाहर हमारी उन्नति में बाधक, विघ्न कारक शत्रु सब नष्ट हों। जिससे आनन्द पूर्वक हम आप को प्राप्त हों। धन्यवाद पूर्वक हमारी आपको अनन्त-बार नमस्कार हो। हमारी रक्षा करो एक मात्र आप ही हमारे रक्षक हो।

हे परमेश्वर! परम पिता परमात्मन् आप हमारे संरक्षक और सहायक तथा प्रेरक हैं। हम सब मिल कर एक तुम्हारी ही भक्ति करें, तुम्हारे ही चरणों में श्रद्धा भक्ति पूर्वक शिर झुकाते रहें और एक मात्र तुम्हारी ही सहायता चाहें। अय हमारे आत्मा जगदीश्वर! आप अनन्त क्षमा स्वरूप और दयालु हो। हे करुणासागर! हम तुम्हें छोड़ कर और किसी शरण लें। केवल एक मात्र तुम ही हमारे आधार और अधिष्ठान हो। हे हमारे सर्वस्व परमात्मन्! हम तुम्हारे पवित्र चरणों को बारम्बार प्रणाम करते हैं। आप ही हमारी टेक हो और पत रखने वाले हो, प्रतिज्ञा पर आप ही दृढ़ता

के स्थिति स्थापक हो। हे अनन्त अपार प्रकाश स्वरूप, पवित्र ज्योति परमात्मन्! आप हमको श्रेयस्कर श्रेष्ठ मार्ग से अपनी प्राप्ति की ओर ले चलिये, आप ही हमारे सत् पथ प्रदर्शक नेता तथा संचालक हैं। हे अन्तर्यामिन! हम तेरे हैं, हमको अन्तर्यामी रूप से प्रेरणा करो कि हम तेरे उस मार्ग पर चलें कि जिस पर तेरे पूर्ण भक्त ऋषि महर्षि चले हैं और जिस मार्ग द्वारा तुमको प्राप्त हो चुके हैं। जिन पर तुम्हारा परम अनुग्रह तथा प्रसाद हुआ हो। और हे सर्व शक्तिमान हमारे प्रभु! हमें उस मार्ग से कभी मत चलाओ जिस पर तेरे अभक्त चले हों, और तुम्हारी प्रसन्नता से हम कभी वंचित न रहें। हे प्रभु तुम हमारे अन्तर्यामी प्रेरक सखा हो, हम तुम्हारी ही शरण हैं अतएव हमारी रक्षा करो। हे जगदीश्वर, जगदाधार! हम को वह पवित्र दृढात्मिका बुद्धि प्रदान करो, कि जिसमें केवल एक मात्र तुम्हारा ही दृढ़ विश्वास तथा निश्चय हो। हमको वह अहंकार दो जिसमें हम अपना आपा तुमको कह सकें, मन

में तुम्हारा शिव संकल्प उठे, चित्त में तुम्हारा ही चिन्तन रहे। हमारे नेत्र और हृदय खुले हों, और उन पर तुम्हारा पूरा अधिकार हो। हमारे सब के द्वारा केवल आपकी जय हो। आप हमारे जीवन के नियन्ता प्राण स्वरूप हो। हे स्वामिन् हमारी प्रत्येक क्रियायें और चेष्टायें आप के चरणों में समर्पण होवें। हमारे भाव महान् उदार तथा गम्भीर हों। हम सब प्राणी मात्र को अपना ही आत्मा स्वरूप देखें और सब की भलाई में अपनी भलाई समझें। अहर्निश परोपकार में रत रहें, और तुम्हारी ही भक्ति का सर्वत्र प्रचार करते हुये, अपने जीवन को सफल करते हुए, तुम्हारे पवित्र ज्योतिर्मय चरणों के समीप बैठने के योग्य बनें। हे पतितपावन ! दीनों के उद्धार करने वाले परमात्मन ! हम को ऐसी उदार बुद्धि दीजिये कि जिससे हम दीन दुखियों की सहायता सच्चे हार्दिक भाव से करें। हमें तुम्हारे प्रेम में ही जीवन प्रिय हो। हे विश्वात्मा ! विश्वस्वरूप !! हम तुम्हारे भक्ति मार्ग पर चलते हुये महान्

दुःखों को भी सानन्द सहन कर सकें, तुम्हारे भजन में दृढ़ रहें, सब के साथ पवित्र प्रेम करें। हे प्रेमाकर! हम सब को अपना ही आत्मा जानें, हमारा आचरण सबकी भलाई के लिये हो। हे अनन्त शक्ति परमात्मन्! आपकी शक्तियें अपरिमित और बे अन्दाज हैं तुम्हारी दात से कोई बढ़ नहीं सकता है। तुम्हारी दक्षिणा ज्योति की तरह सब के ऊपर जगमगा रही है। तुम्हारी शक्तियों और सच्चे उदार वचनों, मेहरबानियों का कोई नियन्ता नहीं है। कोई नहीं कह सकता है कि उसने मुझे नहीं दिया है। तुम्हारे द्वार से कोई निराश नहीं गया है। सब ने अभीष्ट फल प्राप्त कर जीवन का फल पाया है। हे राम कृष्णादि अनन्त नामों और रूपों के धारण करने वाले हमारे सच्चे प्रभु! अन्त में हमारी यही प्रार्थना है, कि हम तेरे सच्चे भक्त बनें, तेरी ही भक्ति का प्रचार करें, हम सब के द्वारा तुम्हारी ही इच्छा पूर्ण हो, सर्वत्र तुम्हारा ही राज्य हो। हे अनन्त अपार ज्ञानानन्द स्वरूप! आपको हमारा अनन्त धन्यवाद हो और आपका

हमको आशीर्वाद हो । अतएव साञ्जलि बद्ध आपको भूयोऽपि नमस्कारों पर नमस्कार है ।

ओ३म् शंकरोतु शंकरः ।

दोहा-ओ३म् निरंजनं दुःख भंजनं ररंकार ओंकार ।
सत्य पुरुष सोऽहं तुही अलखं सर्वाधार ॥
ओ३म् निरंजन ररंकार प्रभु सोऽहं सत्य नाम करतार
अच्युत गुरु गोविन्द दातार परमानन्द रूप निरधार
एक अखण्ड ज्ञान भण्डार तुमरी ज्योति का उजियार
मैं, मैं, मैं पन सर्वाधार नेति नेति कर वेद उचार
एक आत्मा अपरम्पार शंकर ब्रह्म सर्वका सार
ओत प्रोत सब में निरंकार जीवन प्राण आप ओंकार
हरि नारायण अगित तार देव देव मैं करहूं पुकार
कृष्णानन्ताच्युतहं गोड़ हूं फट अल्ला सर्व पसार
विनवो तुमको बारम्बार प्रीतम प्यार करो उद्धार
तद्धन गणपति नैनमभार होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं
ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम् ।
योगीन्द्रसेव्यं भवरोगवैद्यं

श्रीमद्गुरुंनित्यमहं नमामि ॥

परं पराणां परमं पवित्रं
परेशमीशं सुरलोकनाथम् ।
सुरासुरैरर्चितपादपद्मं
सनातनं लोकगुरुं नमामि ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

स्वराज्यसाम्राज्यविभूतिरेषा
भवत्कृपा श्रीमहिमः प्रसादात् ।
प्राप्ता मया श्रीगुरवे महात्मने
नमो नमस्तेऽस्तु पुनर्नमोस्तु ॥

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादि लक्ष्यम्
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी साक्षीभूतम्

भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्गुरूंतं नमामि
ममात्मा परमात्मा विश्वात्मा विश्वस्वरूप
ब्रह्मात्मा सर्वात्मा सूर्यात्मा ज्योति स्वरूप
अखण्डात्मा पूर्णात्मा ज्ञानात्मा ज्ञानस्वरूप
सुखात्मा चिदात्मा सदात्मा सत्यस्वरूप
भावात्मा भवात्मा शून्यात्मा शून्यस्वरूप
ज्ञातात्मा ज्ञेयात्मा ध्येयात्मा ध्यानस्वरूप

ओं नमः शम्भवाय च मयो भवाय च। नमः शंकराय च मयस्कराय च। नमः शिवाय च शिव तराय च॥

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्ति रेवशान्तिः सामा शान्तिरेधि॥

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ं नमामि
वस्वरूप
न स्वरूप
नस्वरूप
स्वरूप
स्वरूप
स्वरूप
भवाय
य च।
॥
ान्तिः
षधयः
वेदेवाः
शान्ति

TENDER NOTICE

1. The school invites sealed tenders by 26 Apr 2015 as u
(a) Installation of smart class projects for 12 rooms

mittent rain accompanied
by strong winds.
The day temperatures

# गुरु वंदना ।

श्री गुरुं परमानन्दं वन्दे स्वानन्द विग्रहम् ।
यस्य सानिध्य मात्रेण चिदानन्दायते तनुः ।१॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुदेवो महेश्वरः ।
गुरु साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥२॥
अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३॥
यत्सत्येन जगत्सत्यं यत्प्रकाशेन भातियत् ।
यदानन्देन नन्दन्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥४॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥५॥

---

मुद्रक—भूमानन्द ब्रह्मचारी "भक्ति प्रेस"
श्रीभगवद्भक्ति आश्रम, रामपुरा रेवाड़ी ।